MADHYA PRADESH

Ramniwas Rathore
Government Primary School Chadoli
Neemuch, Madhya Pradesh
Email id: lalwanimeister@gmail.com

Abstracts

Many efforts were made at the school level for quality in education – such as BAL cabinet – in which students are given responsibility as a minister in different fields under the guidance of teachers. Second, innovations were conducted for educational quality in teaching-learning process, such as use of mikes, Peer-learning, use of TLC materials. Third, innovative practices were developed through music, such as students actually remembered many things like capital, months, week days, etc through songs and rhymes. Programme like *Bache kahan Jaoge* actually motivated people to send their children to school.

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

मध्यप्रदेश के नीमच जिला मुख्यालय से 20 किमी दूरी पर ग्राम चड़ौली स्थित है। ग्राम में अन्य पिछड़ा वर्ग के रावत (मीणा) जन सामान्य रुप से निवास करते है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहॉ की जनसंख्या 250 है। जिसमें पुरुष, महिलाएँ एवं बच्चे शामिल है । ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रुप से खेती और मजदूरी पर निर्भर है। यहाँ निवासरत वर्ग अत्यंत गरीब है । यहॉ पर प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय तक अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है । प्राथमिक विद्यालय चडौली में दो शिक्षक कार्यरत है । मैं शासकीय प्राथमिक विद्यालय चड़ौली में दिनांक 30.06.1983 को ज्वाइन हुआ।

शाला का सन्दर्भ : चुनौतियाँ

1. **बच्चों को शाला में दर्ज करवाना एक बड़ी चुनौती थी । जब में ज्वाइन हुआ तब बच्चों को चौपाल पर बिठाकर पढ़ाया जाता था। उस समय शाला में भौतिक सुख-सुविधाओं का बहुत अभाव था ।**
2. **जन समुदाय को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना व अपने बच्चों को शाला में पढ़ने हेतु भेजना बहुत बड़ी चुनौती थी।**
3. **नामांकन होने के बाद उनका ठहराव बहुत बड़ी चुनौती बनकर उभरी ।**
4. **जनसमुदाय एवं शाला प्रबंधन समिति को जीवन्त रूप में शाला से जोड़कर जनसहयोग लेना जिससे शाला का भौतिक वातावरण भी सुधार जा सके ।**
5. **बच्चो को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार जो शिक्षण में सहायक हो की खोज करना जिससे बच्चे का सर्वांगीण विकास हो सके ।**

चुनौतियाँ के समाधान की योजना -

1. **जनसमुदाय एवं शाला प्रबंधन समिति को जीवन्त रूप में शाला से जोड़कर जनसहयोग लेना - जनसमुदाय को स्कूल से सीधा जोड़ने के लिए उन्हें प्रेरित करना अति आवश्यक था इसके लिए शिक्षक द्वारा समुदाय के बीच निम्न तरीके अपनाये गए ।**
2. **यहॉ प्रधानाध्यापक द्वारा शराब पीने की प्रथा को बंद कराने के लिए लोगों को निरंतर समझाया गया । शराब के दुष्परिणाम के बारे में भी समझाया गया । पूर्व में शराब के नशे में लोग शाला परिसर में भी आ जाते है पर धीरे-धीरे जागरुकता आने से लोगों में परिवर्तन आना शुरु हो गया ।**
3. **बाल विवाह की प्रथा के दुष्परिणाम को पालको को बताया गया तथा बाल विवाह को बंद करवाने के प्रयास किये जिसे सभी ग्राम वासियो ने स्वीकारा और बालिका शिक्षा के लिए भी प्रेरित किया गया परिणामस्वरुप जितनी भी बालिकाएं गांव में है सभी मुलभूत दक्षताएं पूर्ण कर चुकी है प्रधानाध्यापक के इन्ही प्रयासों की वजह से उनकी छवि एक अच्छे व्यक्तित्व के रूप में बनी ।**

परिणामस्वरुप शाला में जनसहयोग आसानी से प्राप्त किया जा सका । जनसमुदाय शाला परिवार के हिस्से की तरह ही है जब कभी भी बुलाया जाता है सभी तत्पर रहते है ।

- शाला में खेलकूद मैदान का समतलीकरण एक जटिल समस्या थी क्योकि उसमें अनुमानित खर्च बहुत अधिक था । शाला के प्रधानाध्यापक द्वारा ग्रामवासियों से बात कर यह बताया गया कि समतलीकरण का खर्च अधिक है और इतनी राशि शाला मद में नहीं होती है तथा ग्रामवासियों से जीवंत सम्पर्क होने के कारण सहयोग राशि इकठ्ठी होना शुरु हुई । मासिक बैठक में जब समतलीकरण का प्रस्ताव रखा गया तब ग्रामवासीयों ने स्वयं के व्यय से इसे कराने का निर्णय लेकर लगभग 1 लाख रु. से भी ज्यादा का खर्च कर कार्य पूर्ण भी करवाया ।
- शाला भवन में बाउण्ड्रीवाल नहीं होने के कारण पैड़-पौधे, बगीचे लगाना मुश्किल था तथा बच्चों के लिए भी कहीं ना कहीं असुरक्षा महसुस हो रही थी । इस हेतु शिक्षक द्वारा गॉव में सम्पर्क कर गॉव के सभी बड़े-बुढ़ो एवं वरिष्ठजनों को इस बारे में समझाया गया तब शिक्षक के सुझाव पर गांव वालों ने स्वीकार करते हुए शाला के चारों तरफ खम्बे लगाकर चारों ओर वायर फेंसिंग करवाई गई । यह समस्त कार्य जनसहयोग व शाला प्रबंध समिति के माध्यम से किया गया । इस प्रकार अनेक कार्यो में जनसहयोग मिलता रहा है ।

- जन समुदाय के सहयोग व शाला प्रबंध समिति के मार्गदर्शन में गांव वालों द्वारा शाला में बिजली फिटिंग एवं पंखे लगवाए गए। जन समुदाय द्वारा शाला भवन में पेंटिंग करवाने में भी सहयोग किया गया है इस प्रकार अब शाला का सौंदर्यीकरण का कार्य पूर्ण हो चूका है ।
- शिक्षकों ने स्वयं के व्यय तथा जनसमुदाय से बच्चों के लिए खेलकुद की पर्याप्त सामग्री शाला में उपलब्ध करवाई जिसमें प्रत्येक बच्चे के लिए बेडमिंटन, फुद्दी बेट, कुदने की रस्सी ओर भी कई तरह की खेल सामग्री उपलब्ध है।

शासन द्वारा अनेक योजनाएं चलाई गई जिसमें दक्षता संवर्धन योजना के अंतर्गत कई वर्षो से इस शाला का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। इसके लिए शाला को दक्षता संवर्धन के अंतर्गत कई बार पुरस्कृत भी किया गया। वर्तमान स्थिति में शासकीय प्राथमिक विद्यालय चड़ौली शाला सिद्धि-हमारी शाला ऐसी हो, कार्यक्रम अंतर्गत सफलता के नए आयाम स्थापित कर चुकी है।

शालाप्रबंधसमितिकासक्रियसहभागिताकालाभसदैव हीशालाकोमिलताहै।शालामेंमासिकबैठकमेंमहिलाएं एवंपुरुषदोनोंहीसहभागिताकरतेहै। साथ ही शाला के पूर्व छात्र जो वर्तमान में शाला प्रबंध समिति के सदस्य भी है उनके द्वारा भी समय समय पर बच्चो को शिक्षण कार्य करवाया जाता है । शाला प्रबंध समिति के सदस्यशाला में लगे पेड़-पौधों का भी ध्यान रखते है।एक बीज जो 1983 में शाला के शिक्षक द्वारा परिसर में लगाया गया था वह आज एक बड़े वृक्ष का रुप चुका है।

चुनौतियाँ के समाधान की योजना -

बच्चो को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार -
शिक्षा में गुणवत्ता हेतु शाला स्तर पर कई प्रयास किये गये इनमें से 3 मुख्य प्रयास रहे जिससे शाला में आश्यर्चजनक परिवर्तन हुए ।

1. <u>बाल केबिनेट की सहभागिता</u> -

बाल केबिनेट में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में मंत्रीमंडल बनाया गया जिसमें सभी को अलग-अलग दायित्व सौंपे गये । शाला में प्रत्येक मंत्री अपने दायित्व को शिक्षक के मार्गदर्शन में बखुबी निभा रहे है । अनुपस्थित

बच्चों के पालकों से सम्पर्क के लिए भी बाल केबिनेट की जवाबदारी तय है । पौधों की देखरेख, पौधों को पानी देना, प्रार्थना में अनुशासन, सुविचार, लाईन से जुते-चप्पल जमाना, कचरा ना करना, भोजन करने से पहले हाथ धोना, भोजन मंत्र बोलने के बाद भोजन शुरु करना आदि कई कार्यो का दायित्व बाल केबिनेट की जवाबदेही मे है ।

अनुपस्थित बच्चो को शाला में लाने के लिए किये गए प्रयासों में बाल केबिनेट का भरपूर सहयोग रहा -

- बाल केबिनेट पीले चावल लेकर बच्चो के घर जाते है, और स्कूल आने के लिए आमंत्रित करते है
- टोली बनाओ अभियान अंतर्गत भी प्रेरित किया जाता है
- पोस्टकार्ड लेखन

2. शिक्षा गुणवत्ता हेतु नवाचार -

1. शाला में शिक्षा की पद्धति 'पियर लर्निंग' पर आधारित है । यह इस विद्यालय की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है । यहॉ कमजोर बच्चों को कमजोर न कहकर 'स्लो लर्नर' कहा जाता है । ग्रुप इस तरह से बनाये जाते है जिससे स्लो लर्नर के साथ एक फार्स्ट लर्नर को बिठाया जाता है जिससे फार्स्ट लर्नर में ग्रुप संचालन क्षमता, विषयवस्तु के प्रति आत्मविश्वास भी बढ़ता है । बच्चे बच्चो के साथ आसानी से सिख जाते है ।
2. शाला सिद्धी कार्यक्रम अंतर्गत शाला ने स्वमूल्यांकन किया व और सुधार के चिन्हित क्षेत्र लिए गए है उन्हें तय समय सीमा मे पूर्ण करने का निश्चय किया । आज की स्थिति मे शाला स्तर 3 पर है इससे शाला का वातावरण भयमुक्त एवं आनन्दमयी बन गया है।

3. गतिविधियां जो शाला में करवाई गई -

जिससे खेल-खेल में बच्चो को सीखाने का प्रयास किया गया । इनसे वातावरण को भी भयमुक्त और आनन्दमय बनाने में काफी सहायता मिली ।-

1. शाला के सभी बच्चो के परिचय पत्र बनाकर नाम से परिचित कराया ।
2. बच्चे जो साफ–सफाई से नहीं आए उनको शाला में ही तैयार करना । (तेल, काँच, कंघा)
3. पर्यावरण में रितुओं के जानकारी की गतिविधी
4. वर्ष के महीनों के नाम के लिए "साल में होते महीने बारह'
5. अंग्रेजी में सप्ताह के नाम के लिए "एक विक में गुड़िया ब्याही'
6. "बच्चे कहाँ जाओगे' स्कूल के लिए प्रेरित करने की गतिविधी
7. हिन्दी में सप्ताह के नाम याद रखने के लिए, "एक सप्ताह के दिन है सात'

8. पर्यावरण में जानवरों की जानकारी की गतिविधि "एक मोटा हाथी'
9. विलोम शब्दो के लिए गतिविधि "हवा चल रही है '
10. घटाने की संक्रिया के लिए "5 छोटी चिड़िया'
11. सब्जीयों के नाम अंग्रेजी में बोलने की गतिविधी
12. मेंढक कूद, रेस
13. शरीर के अंगो के नाम पहचानना
14. शब्द चकरी के माध्यम से विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द आदि सीखना
15. पहाडे सिखाने के लिए पहाडे की गतिविधी
16. ज्यामितीय आकृतियां सीखाने के लिए ज्यामितीय मॉडल से जानकारी
17. पर्यावरण में रबी और खरीब की फसलो की जानकारी के लिए वास्तविक वस्तुओं को चार्ट पर लगाकर समझाया जाना और भी कई पाठ्योत्तर गतिविधियाँ करवाई जाती है

प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार के परिणाम

1. सभी नवाचारी गतिविधियों, हस्त निर्मित टीएलएम, दिवार पर बनाये गए स्थाई टीएलएम एवं पियर लर्निंग के द्वारा बच्चे बुनियादी शिक्षा पूर्ण कर चुके है व उन्नत दक्षता की ओर अग्रसर है ।
2. जनसमुदाय, बाल केबिनेट एवं शाला प्रबंध समिति के सहयोग से शाला का भौतिक स्वरुप बदला है । शाला का वातावरण भयमुक्त व् आनंदमयी हो गया है ।

भविष्यकालीन योजनाएँ

जनसमुदाय के सहयोग से शाला को पूर्णत डिजिटल बनाना । प्रत्येक बच्चे के हाथ में टेबलेट हो, बैग-लेस अवधारणा लागु करना ।

स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिका

मै स्वयं को स्कूल प्रशासक न मानते हुए मोटिवेटर मानता हु इसके लिए में शाला हित में अपने साथी शिक्षक, जनसमुदाय एवं शाला प्रबंध समिति तथा बाल केबिनेट को मोटीवेट करने के साथ साथ समय समय पर पुरुस्कृत भी करता हु ।

स्कूल में परिवर्तन के बाद स्वयं में बदलाव -

आज जब शाला में बच्चो की दक्षता पूर्ण है, शाला का भौतिक स्वरुप भी अच्छा हो गया है, वायर फेंसिंग, समतलीकरण ये सभी कार्य अब पूर्ण हो गये है तो आत्मविश्वास बड़ा है और हमेशा स्कूल हित में नया करने की प्रेरणा मिलती है इन सभी कार्यो को देखकर वरिष्ट कार्यालय द्वारा कई बार पुरुस्कृत भी किया गया है अब में पहले से दुगुनी उर्जा से कार्य कर पा रहा हु ।